बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

बाँदा – २१०००१ (उ0प्र0)

Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 160 /2026) Year: 8th

जिला: बाँदा	जारी करने की तिथि: 16.08.2026

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	शाक-भाजी	□मृदा नमी संरक्षण तथा खरपतवार नियंत्रण की दृष्टि से समस्त फसलों की बुआई मेड़ी पर या उठी हुई क्यारियों में पलवार का प्रयोग करके ही करें। लोबियाए भिंडीए बैंगनए टमाटरए मिर्च तथा कद्दू वर्गीय फसलों में काली पॉलीथिन अथवा सूखी घास की पलवार प्रयोग करें। कद्दू वर्गीय सब्जियों में तारए झाड़ी अथवा पंडाल बनाकर लताओं को ऊपर चढ़ाने की व्यवस्था कर दें। □खड़ी फसलों में समुचित ढंग से खरपतवार नियंत्रण करेंए ताकि कीड़ों एवं रोगों का प्रकोप कम हो। खेत से जलनिकासी का समुचित प्रबंध करें। □फसलों को थ्रिप्स तथा सफेद मक्खी जैसे चूसक कीड़ों के प्रकोप से सुरक्षित रखने के लिए यथावश्यक उपयुक्त कीटनाशी का प्रयोग करें। □ वर्षा ऋतु हेतु टमाटरए बैंगन तथा मिर्च की तैयार पौध की रोपाई कर दें और खरीफ प्याज की पौधशाला तैयार कर लें। सीधी बोई जाने वाली फसलों की भी उपरोक्त सुझावों के अनुसार बुआई कर दें। बुआई से पहले प्रति किलो बीज में 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम अथवा कैप्टन मिलाकर बीजोपचार करें तथा सिंचाई के जल में प्रति लीटर 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम घोलकर ड्रेंचिंगधसिंचाई करें।
2-	शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन	**शस्य.प्रबंधन** इस मौसम की फसलों में खरपतवार की समस्या अधिक होती है। समय समय पर निराई गुड़ाई करते रहने से इस पर नियंत्रण रखा जा सकता है। □धान की फसल में २५ दिन की अवस्था पर बिस्पायरिबैक सोडियम अथवा साथी नामक शाकनाशी का २५ ग्राम मात्रा का प्रयोग करना चाहिए। □उरद एवं अरहर की फसल में इमेजाथापिर नामक शाकनाशी का प्रयोग खड़ी फसल में किया जाना चाहिए। □तिल की फसल में खरपतवार नियंत्रण हेतु क्युजालोफोप इथाइल नामक शाकनाशी की ५० ग्राम सक्रिय तत्व प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए। □शाकनाशियों का प्रयोग हमेशा फ्लेट फैन नाजल से करना चाहिए । तिल की फसल जल भराव के प्रति अधिक संवेदनशील होती है अतः जल निकास का समुचित उपाय करना चाहिए। □इस समय कृषित एवं आकृषित भूमि पर, घरों के आस पास, सड़क के किनारे आदि जगहों पर गाजर की तरह पत्ती वाला सफेद फुलयुक्त पौधा बहुतायत में पाया जाता है ।

		□इस पौधे को गाजरघास य पार्थेनियम कहा जाता है । यह एक सामाजिक समस्या है और इसका निवारण सामाजिक सहयोग से ही हो सकता है । □गाजरघास मानव, फसल एवं पशु स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है इस पौधे को जड़ सहित उखाड़ फेंकना चाहिए इसे उखारते समय इसके सीधे संपर्क में आने से बचना चाहिए । □इसके रोकथाम के लिए ग्लाय्फोसेट नामक रासायनिक खरपतवारनाशी की १०० मिली मात्रा प्रति टैंक (१५ ली ०) पानी की दर से मौसम साफ रहने पर छिड्काव करें । **मृदा-प्रबंधन** ➢ खरीफ में बोई गई दलहन, तिलहन फसलों एवं धान फसल में बची हुई नत्रजन उर्वरकों की मात्रा का प्रयोग करें। □ वर्षा के दौरान होने वाले मृदा क्षरण एवं मृदा कटाव को रोकने हेतु अपने – अपने खेतो का मेड बंधान लगातार करतें रहें। □ बागवानी फसलों में पौधे की उम्र एवं आवष्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें। सामान्यतः प्रति पौधा प्रति वर्ष उम्र के अनुसार 100 ग्राम पोषक तत्वो का प्रयोग करना चाहिए। □ वर्षा के दौरान जिन भी किसान भाईयों के फसल वाले खेतों में पानी भर गया है उसका अविलम्ब निकास करने का प्रयत्न करें। □ जो सब्जी फसलें अभी खेतों में है उनमें आवष्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	□ पशुओं को बाँधने के स्थान (पशुशाला) की छत को साफ व दुरुस्त रखें जिससे पानी का रिसाव न हो। □ वर्षा के मौसम में सभी पशुओं को अन्तः परजीवी नाशक दवाई अवश्य देवें क्यूंकि इस ऋतु में अन्तः परजीवी जैसे कृमि इत्यादि कई गुना वृद्धि दर के साथ पशुओं में होते हैं। □ वाहय परजीवी जैसे मक्खी, चिचिड़ी, जूँ इत्यादि का प्रकोप भी वर्षा ऋतु में बढ़ जाता है।जिसके बचाव हेतु कीटनाशक का छिड़काव पशुशाला में नियमित अंतराल पर करते रहें। साथ ही पशुशाला के निकट खरपतवार एवं घास इत्यादि न बढ़ने दें। □ पशुओं के दानेचारे के भण्डारगृह में भी नमी तथा पानी के जमाव से बचाना चाहिए अन्यथा दाने एवं चारे इत्यादि में कवक एवं फफूंद की वृद्धि हो सकती है और ऐसा भोजन पशुओं को देने से यह पशुओं में कैंसर का कारण भी बन सकता है। अतः यह सुनिश्चित करें की पशुओं की भोजन सामग्री सूखी जगह में संग्रहीत करे।
4–	**कीट-प्रबंधन**	□ धान में पत्ती लपेटक के नियंत्रण हेतु खेत की निगरानी कर प्राकृतिक शत्रुओं (परभक्षी) का फसल वातावरण में संरक्षण करें। क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 1.25 ली0 प्रति0 हे0 की दर से छिड़काव करें। हरा फुदका के नियंत्रण हेतु कार्बोफ्यूरान 3 जी 20 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से बुरकाव करें। भूरा फुदका के नियंत्रण हेतु यदि सम्भव हो तो खेत से पानी निकाल देना चाहिए व यूरिया की टाप ड्रेसिंग रोक देनी चाहिए। डायनोटेफुरान 0.5 ग्राम प्रति लीटर अथवा पाईमेट्रोजिन 0.6 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें।

		□ मक्का/ज्वार/बाजरा में पत्ती लपेटक व अन्य कीट के नियंत्रण हेतु खेत एवं मेड़ों को घास मुक्त रखना चाहिये एवं मेड़ों की छटाई करना चाहिये। फसल की साप्ताहिक निगरानी करना चाहिये। रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 1.50 लीटर मात्रा का 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से छिड़काव करना चाहिये। □ मक्का में फाल आर्मीवर्म के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट कीटनाशी की 4 ग्राम मात्रा प्रति 10 लीटर की दर से प्रयोग करें अथवा क्लोरंतरनिलीप्रोल रसायन का 4 मिलीलीटर प्रति 10 लीटर की दर से प्रयोग करें। □ उर्द/मूँग में रोग के वाहक कीट सफेद मक्खी की रोकथाम के लिये पीला चिपचिपा ट्रैप का प्रयोग करें व फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। □ टमाटर, फूलगोभी, मिर्च, शिमला मिर्च, पत्तागोभी, बैगन की नर्सरी में प्रारम्भ में सफेद मक्खी के प्रवेश को रोकने के लिए लो–टनल पॉलीहाउस का प्रयोग करें। पूर्व में रोपित बैगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए।
5.	**वानिकी प्रबंधन**	□ वानिकी पौधशाला / नर्सरी संचालन □ जल निकासी एवं सिंचाईः अगस्त में पर्याप्त वर्षा होने के कारण पौधशाला में पानी देना कम या बंद कर दें। पॉलीबैग एवं क्यारियों में जलभराव न हो, इसके लिए उचित निकासी व्यवस्था बनाए रखें। □ खरपतवार नियंत्रण (महत्वपूर्ण): अगस्त की बारिश से खरपतवार तेजी से बढ़ते हैं। पॉलीबैगों के अंदर, क्यारियों के बीच, तथा खेत में लगे पौधों के आस–पास निराई–गुड़ाई अवश्य करें, ताकि पोषक तत्वों, नमी और धूप की प्रतिस्पर्धा कम हो। □ पोषण प्रबंधनः बढ़ते मौसम में पौधों की मजबूती के लिए एन.पी.के. (19:19:19) की पर्णीय स्प्रे करें या गोबर की स्लरी (घोल) का प्रयोग करें। दोनों को एक साथ न लगाएँ। □ ग्रेडिंग एवं छँटाई : □ स्वस्थ एवं सबल पौधों को कमजोर पौधों से अलग करें, ताकि समान वृद्धि हो सके और प्रबंधन आसान हो। □ पॉलीथीन थैलियों जिनमें बीज अंकुरित नहीं हुए हैं को स्वस्थ व विकसित पौध से प्रतिस्थापित/प्रत्यारोपित करें। □ रोग एवं कीट प्रबंधन : □ नमी के कारण फफूंदी (डैम्पिंग ऑफ, पत्ती धब्बा) एवं कीटों का प्रकोप बढ़ सकता है। आवश्यकतानुसार उचित फफूंदनाशी/कीटनाशक का छिड़काव करें। □ पौधााला में आद्रपतन या कमरतोड रोग की रोकथाम हेतु कार्बेन्डाजिम (10ग्राम)+मेन्कोजेब(25ग्राम) प्रति लीटर पानी के घोल से रोक के लक्षण दिखते ही सिंचाई करें। □ कृषि–वानिकी प्रणाली □ कृषि–बागवानी–वानिकीः बबूल, नीम, शीशम (टिम्बर) + आम, अमला, गुआवा (फल). मौसमी फसलों का मिश्रण अपनाएँ।

		□औद्योगिक कृषिवानिकीः दीर्घकालिक लाभ के लिए गम्हार, मेलिया डुबिया, या कदम जैसी उच्च–मूल्य वाली प्रजातियाँ लगाएँ। □औषधीय एवं बाँस मॉडलः इस मौसम में बाँस और त्रिफला (आँवला, हरड़, बहेड़ा) जैसी औषधीय प्रजातियों की स्थापना एवं रखरखाव करें, जो इस क्षेत्र के लिए उपयुक्त हैं। □जून / जुलाई माह में रोपित पौध, जो कि मृत हो गए हैं, स्वस्थ पौधों से प्रत्यारोपित करें। □रोपित पौधें के थालों में निराई गुड़ाई करें तथा साथ ही साथ उजागर जड़ों को पुनः मिट्टी से आच्छादित करें। □विशेष ध्यान देंः अगस्त की बारिश खरपतवारों को बहुत तेजी से बढ़ाती है, इसलिए पॉलीबैगों के अंदर, क्यारियों के बीच, और खेत में लगे पौधों के आस–पास निराई–गुड़ाई को सर्वोच्च प्राथमिकता दें, ताकि पोषक तत्व, नमी और प्रकाश के लिए प्रतिस्पर्धा कम से कम हो।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार	6. डॉ मयंक दुबे
2. डॉ दिनेश साह	7. डॉ दिनेश गुप्ता
3. डॉ ए.सी. मिश्रा	8. डॉ पंकज कुमार ओझा
4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव	9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह
5. डॉ राकेश पाण्डेय	10. डॉ जगन्नाथ पाठक
	11. डॉ धर्मेन्द्र कुमार